मेरी व्यथा सुन ले हे ! इन्सान

नमस्कार दोस्तों, मैं तुम्हारा मित्र पानी हूँ,
मैं जहां हूँ, वहां जीवन है, खुशहाली है, हरियाली है,
मैं तुम्हारे हर काम में भागीदार हूँ–
चाहे वे छोटे–छोटे काम हों
या बड़े–बड़े "डाम"
तुम्हारी रसोई से लेकर, टॉयलेट व स्नानागार तक,
सफाई–धुलाई से लेकर, खेत–खलिहान तक,
रेलगाड़ी से लेकर, हवाई–जहाज तक,
हेयर सैलून से लेकर, कल कारखानों तक
मेरे बिना तुम अधूरे हो, मेरे बिना तुम अंधेरे में जीओगे,
जरा सोचो, मेरे बिना तुम्हारा क्या होगा ?
तुमने मेरी बहुत बर्बादी की है,
तुम्हारे कारण मैं समाप्ति की ओर हूँ
तुम नल खुला छोड़ देते हो,
कार को बाल्टी से नहीं पाइप से धोते हो
दाढ़ी बनानी हो या दन्त–मन्जन, वो भी नल खोलकर,
फर्श धोना हो या आंगन, सब पाइप जोड़ कर
कब तक बर्बाद करोगे मुझे, क्या खत्म कर ही छोड़ोगे मुझे
तुम्हारी फैक्ट्रियों ने, तुम्हारी मिलों ने, तुम्हारे ट्यूबवैलों ने,
मेरे गोदामों में भी डाका डाला है
मेरा घर उजाड़ कर क्या मिलेगा तुम्हें
थोड़ा बहुत बचा भी था तो,
तुम्हारे प्रदूषण ने मुझे जहर बना दिया
मैं जल था, मैं जीवन था, मैं आज भी जीवन हूँ,
मुझे मेरा असली स्वरूप लौटा दो,
मैंने तो हमेशा तुम्हारी भलाई की,
फिर तुम भलाई के बदले बदी क्यों देते हो
अरे ! अब भी संभल जाओ, मुझे बचाओ, जीवन पाओ,
जल है तो जीवन है, अरे मूर्खो! "जल ही तो जीवन है।"

बी.सी. पन्त
रा.इ.का. सैजना (खटीमा)
जनपद – ऊधमसिंह नगर
मो. 9759165182

पानी

बचाओ–बचाओ पानी व्यर्थ न बहाओ पानी
नष्ट न हो जाए सृष्टि नित नया बनाओ पानी ।
पृथ्वी पर बहता पानी प्रदूषण को सहता पानी
पड़ रहा हूं मैं खतरे में सदा यह कहता पानी ।।
प्रकृति की पहली धार पानी जीवों के लिए उपहार पानी
आदि से अभी तक अनिमेष देख रहा यह संसार पानी ।
कभी नहीं सोता है पानी जहां कहीं भी होता है पानी
मनुष्य कितना रोता है तब जब वह सारा खोता है पानी ।।
सर्वत्र है मधुर राग पानी बुझा देता है पूरी आग पानी
एक हिस्सा है यह जमीन तो है यहां तीन भाग पानी ।
हमारा तन–मन है पानी सभी का जीवन है पानी
प्यासे प्राणों से पूछ लो सबसे बड़ा धन है पानी ।।
तुझसे है हमारी काया पानी तू ही है हमारी माया पानी
धन्य है तू मनोरम प्रकृति तूने जो यहां बनाया पानी ।
तू प्राणों का प्राण है पानी तुझसे धन्य–धान है पानी
तू नितांत प्रकृति प्रदत्त अति अमूल्य वरदान है पानी ।।

मछली रानी

मछली जल की है रानी,
जीवन उसका है पानी,
हाथ लगाओ तो डर जायेगी
बाहर निकालो मर जायेगी।

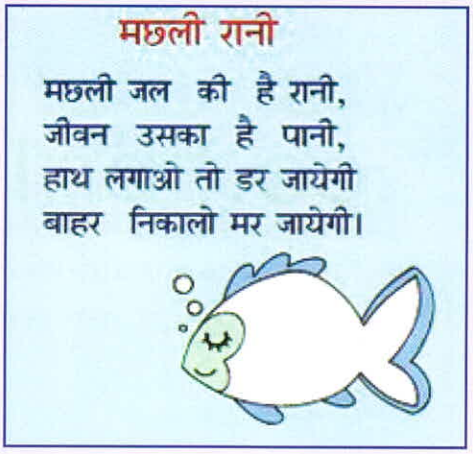

श्री जगदीश प्रसाद तिवारी 'नास्तिक',
अध्यक्ष अ. भा. काव्य कथा एवं कला परिषद्,
2425, गाड़ी अड्डा, हाट मैदान, महू–453 441 (म.प्र.)